भजन

तर्ज–साजन मेरा उस पार है

जिनको धनी पे ऐतबार है,
मिलता उन्हीं को ये प्यार है

1– बीत गया है गम जुदाई का,
अब हमको डर कैसा तन्हाई का
रूहों को जिसका इन्तजार है,
आज मिली वोह बहार है
2– जिनकी चाहत में अखियां तरसी हैं,
जिनसे मिलने को बरसों बरसी हैं
आज हुआ उनका दीदार है,
जो हमारे सरकार हैं
3– जलवा वोह नूरी जब दिखायेंगे,
इक दूजे में हम खो जायेंगे
चरणों में उनके ही करार है,
अंगना धनी पे निसार है